06 / 09 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

तीन कम्बाइन्ड स्वरुप में रहने का अनुभव

➢➢ तीन कम्बाइन्ड रुप का अनुभव

➳ _ ➳ मैं आत्मा भृकुटी सिहासन पर बिराजमान चमकता हुआ सितारा हूँ

→ मैं आत्मा इन आँखों द्वारा देखने वाली

→ मुख द्वारा बोलने वाली

→ कानो द्वारा सुनने वाली

■ इस शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति हूँ

● मन बुध्धि और संस्कारो की मालिक हूँ

● मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ

→ मैं आत्मा और शरीर एक दो से कम्बाइन्ड है

■ अगर मैं आत्मा इस शरीर में नहीं तो

● इस शरीर का कोई अस्तित्व ही नहीं

● यह जैसे की एक हड्डी मांस का पुतला ही है

→ मैं आत्मा पुरुष और प्रकृति या आत्मा और शरीर से सदा कम्बाइन्ड हूँ

■ मैं आत्मा यह एक शब्द ही ख़ुशी के खजाने, सर्व शक्तियों के खजाने, ज्ञान धन के खजाने, सर्व गुणों के खजाने, श्वास संकल्प और समय के खजाने की चाबी है

● इसलिए मैं आत्मा सदा "वाह रे मैं" शब्द के नशे और ख़ुशी में अपने अनादि कम्बाइन्ड रुप में स्थित हु

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा अपने दुसरे भविष्य (विष्णु चतुर्भुज) कम्बाइन्ड रुप का अनुभव करने

→ अपने सुखधाम स्वर्ग में प्रवेश करती हूँ

→ मैं आत्मा स्वयं को हीरो और रत्नों से जडित स्वर्ग महल में स्वयं को देखती हूँ

■ मैं आत्मा राजसिहासन पर हूँ

● मेरे सिर पर डबल ताज है

● 16 कलाओ से सम्पूर्ण

■ मेरा स्वरुप सम्पूर्ण पवित्र

■ विष्णु चतुर्भुज देवता रूप में स्वयं को देखती हूँ

● मेरे सामने मेरी राज दरबार लगी हुई है

● चहू और देवता विचरण करते है

● चारो और सम्पूर्ण पवित्रता

→ देव लोक, देव संस्कृति

■ सभी पावन आत्माये

● पावन प्रकृति

● पावन लक्ष्मी नारायण की यह राज सभा है

● आकाश में विचरण करते हुये देवता पुष्पक विमान में

● चारो और प्राकृतिक सोंदर्य

● फलो और फूलो की सुगंध हवा को भी सुगंधित कर रही है

● ऐसा लगता है जैसे चारो और इत्र छिटक दिया हो

→ मैं पावन देव आत्मा हु

→ मैं सम्पूर्ण पवित्र देवता हु

■ मैं सर्व गुणों से सम्पन हूँ

● मेरा चित सदा प्रसन्न है

■ मैं आत्मा सदैव इस नशे मे रहती हु की,

● "पाना था सो पा लिया, अब पाने को कुछ रहा ही नहीं है"

■ मैं आत्मा तीनो लोको की हद की भी तो बेहद की भी मालिक हूँ

■ तीनो लोक ही मेरे है

● मूलवतन, सूक्ष्मवतन हमारा घर है

● और स्थूल वतन मे तो हमारा राज्य आने वाला है

● मैं आत्मा तीनों लोकों की अधिकारी हूँ

● 21 जन्म के राज्य भाग्य का हमे GUARANTEE CARD बाबा ने दे दिया है

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा पुरूषोतम संगमयुग में अपने तीसरे संगमयुगी कम्बाइन्ड रुप का अनुभव करने प्रवेश करती हूँ

→ जिसमे सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित हुए है

■ पुनः इस संसार को स्वर्ग बनाने के लिए

● और उनका संदेश मुझे भी मिला

→ और मैं आत्मा दौड़ आई मेरे प्राणेश्वर के पास

■ और उन्होंने मुझे स्वीकार कर लिया

● और मुझे शक्तियों से भरपूर कर दिया

→ बड़े प्यार से मेरी पालना करते है, अब हम दो सदा साथ साथ ही रहते है और मिलन मनाते रहते है

■ मैं शक्ति शिवबाबा से सदा कम्बाइन्ड हूँ

● मैं शक्ति शिव के सिवाय कुछ नहीं कर सकती हूँ

● और शिव बाप भी मुझ शक्ति के बिना कुछ कर नहीं सकते है

■ मैं आत्मा सदैव यह स्मृति में रखती हूँ की,

● "मैं हु ही कम्बाइन्ड शिव-शक्ति"

■ मैं आत्मा सदा अपने कम्बाइन्ड रुप की COMPANY

■ और बाबा COMPANIYON को साथ रखती हूँ

● मैं आत्मा बाबा की COMPANY को छोड़

● किसी और की COMPANY में नहीं चले जाती हूँ

● शिव शक्ति कम्बाइन्ड रुप की स्मृति में ही सदा रहती हूँ

● कोई भी कमजोरी को कभी भी स्वप्न में भी अपने पास आने नही देती हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाप के समान OBEDIENT SERVANT हु

→ मैं आत्मा दिन रात सेवा में ही तत्पर रहती हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाप से वफादार हु

➳ _ ➳ मैं आत्मा फरमान-वरदार हु

→ मैं आत्मा बाबा के हर फरमान पर चलके बाबा का साथ निभाती हूँ

■ मैं आत्मा बाबा की सदा की सच्ची साथी हूँ

● इस संगमयुग के अंत तक मैं आत्मा अपने शिव शक्ति के कम्बाइन्ड रूप में ही रहती हूँ